सिक्किम विश्वविद्यालय

क्रॉनिकल

Sikkim University Teaching Recruitment, 2015

Log on to: www.cus.ac.in/index.php/su-rec-2015-teaching-interview

भाग ३, अंक ५ | सितम्बर 2015 | www.cus.ac.in

प्रभारी संपादक की कलम से

प्यारे दोस्तों क्रॉनिकल के सितंबर अंक आप तक पहुँचते समय हम विश्वास करते हैं कि आप सब कुशल होंगे। पहाडों के परे धुंधली असमान की रेखा हमारी स्प्रिट को कम नहीं कर पाई होगी। शैक्षणिक व्यस्तताओं और सह पाठयक्रम गतिविधियों ने हमें पिछले कुछ हफ्तों के व्यस्त रखा है।एक तरफ, विश्वविद्यालय बिरादरी ने ६९ वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान राष्ट्र की सेवा में अपने समर्पण का वादा किया है, जबकि, छात्रों, शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने विश्वविद्यालय परिसर के हर नुक्कड़ और कोने को साफ करने के लिए हाथ मिलाया है विश्वविद्यालय जनसंपर्क के ।६९ वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान राष्ट्र की सेवा में उनके समर्पण का वादा किया है, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ तैयार करने के कार्य में व्यस्त रहा वहीं राष्ट्रीय सेवा योजना तेजी से विलुप्त हो रही स्थानीय संस्कृति के ज्यादा संरक्षण की दिशा में, युवा बुद्धिजीवियों के बीच चेतना जागृत करने की दिशा में काम कर रहा है।और फिर, इस सब के बीच में, शिक्षक दिवस पर छात्रों की और से हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं लिए, एकजुटता, खुशी के क्षणों से सभी अनुभवों के साथ मनाया गया. हम जल्द ही हमारे सिक्किम विश्वविद्यालय परिवार में और अधिक नए सदस्यों के शामिल होने के लिए कई होने के लिए बेसब्री से तत्पर हैं और हम जितना अधिक विकास करते हैं उतना ही हर संभव तरीके से विकास होंने देते हैं।

धृति रॉय

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा उखान प्रतियोगिता

दुनिया भर में लोक परम्पराएं और रीती–रिवाज तेजी से गायब हो रहे हैं। करीब से इस मुद्दे के समाधान के लिए और इस क्षेत्र के युवाओं और आबादी के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए, सिक्किम विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) सेल ने 20 अगस्त को नेपाली भाषा मान्यता दिवस के अवसर पर उखान प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता, एक अनोखी पहल के हिस्से के रूप में, साहित्य और भाषा के माध्यम से, नेपाली लोक परंपराओं को जिंदा रखने के लिए विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रोत्साहित करने में कामयाब रही।कार्यक्रम प्रोफेसर टीबी सुब्बा, माननीय कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में किया गया। श्री टी के कौल, कुलसचिव और डॉ धनिराज छेत्री, छात्र कल्याण के डीन भी इस अवसर पर उपस्थित थे।सिक्किम विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक विभागों से छात्रों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया और नेपाली लोक भाषा में विषय ष्मित्रष् पर नीतिवचन पर आधारित लघु कथाएँ प्रस्तुत कीं।इस प्रदर्शन में प्रदर्शन नेपाली विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पीसी प्रधान और सुश्री गीता निरोला, सहायक प्रोफेसर, नेपाली विभाग, सिक्किम गवर्नमेंट कॉलेज निर्णायक थे। श्री रुद्र पौड्याल, नेपाली भाषा के क्षेत्र में एक प्रख्यात साहित्यिक छवि ने नेपाली भाषा मान्यता दिवस के महत्व को दोहराते हुए दर्शकों को संबोधित किया।सिक्किम विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की ओर से सुश्री रीता शर्मा, संगीत विभाग से श्री आतिश तमांग और गणित विभाग से श्री योगेश कुमार अधिकारी को क्रमशरू प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह प्रतियोगिता इस आशा के साथ समाप्त हुई कि इस क्षेत्र के और इस क्षेत्र के आसपास से छात्र विलुप्त हो रही लोक परंपराओं को बचाए रखने के लिए हर संभव क्षमता में काम करने के लिए सजग रहेंगे।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

69 वें स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को सिक्किम विश्वविद्यालय बिरादरी द्वारा उत्साह के साथ मनाया गया।माननीय कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय, प्रोफेसर टीबी सुब्बा, विश्वविद्यालयके सांविधिक अधिकारियों, संकाय सदस्यों, छात्रों और कर्मचारियों की उपस्थिति में तिरंगा फहराया गया। हिंदी में सभा को संबोधित करते हुए माननीय कुलपति ने, देश के हर व्यक्ति का आह्वान किया कि वह चाहे किसी भी स्थिति, पद या पहचान के हों,, उस संस्था के लिए अत्यंत प्रतिबद्धता दिखाए, जिससे वह जु है । हिंदी में प्रोफेसर सुब्बा का मुख्य भाषण, राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी के बढ़ते महत्व की दिशा में एक इशारा था, और साथ ही देश के विभिन्न भागों से आये, विश्वविद्यालय बिरादरी के प्रत्येक सदस्य के साथ अपने विचारों को साझा करने के लिए सक्षम होने के लिए उनकी इच्छा को परिलक्षित करता है।माननीय कुलपति ने भारत को आने वाले वर्षों में मजबूती से उभरने के लिए हर भारतीय नागरिक के लिए इस आवश्यकता को रेखांकित किया कि वह अपनी संस्था की निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ सेवा करे।कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय, श्री टी के कौल ने भी अपने भाषण में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में एक पूर्व शर्त के रूप में ईमानदारी के महत्व पर बल दिया।संगीत विभाग के छात्रों ने राष्ट्रीय गान बजानेवालों का नेतृत्व किया और संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने राष्ट्र की सेवा में अपने समर्पण का वचन दिया है।

In This Issue

Editor-in Charge's Note Page 1
69th Independence Day Celebration Page 1
Ukhan Competition by National Service Scheme Page 1
Seminars, Workshops, Conferences Page 2
Workshop on "Knowing IQAC" Page 2
Faculty Column by Dr. Sujata Upadhyaya Page 3
Students' Column by Mr. Satyanand Bharti Page 3
Events and Activities Page 4

Layout & Design by:
Dorjee Sherpa Pinasa
Department of Mass Communication

Mailing Address
suchronicle@cus.ac.in

सेमिनर, वर्कशप और कॉनफ्रेन्स

उद्यानिकी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय के डॉ मनिवन्णन, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रमुख डॉ सुजाता उपाध्याय, सहायक प्रोफेसर, और स्नातकोत्तर छात्रों ने 5 से 8 अगस्त 2015 के दौरान केवीके, एसी और आरआई, टीएनएयू, मदुरै, तमिलनाडु में उद्यानिकी विज्ञान, बेल्जियम की इंटरनेशनल सोसायटी द्वारा आयोजित 'अप्रयुक्त पादप प्रजातियाँ : अन्वेषण और संरक्षण पर तीसरी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में निम्न पत्र प्रस्तुत किए
।

1. हिमालय फिलबर्ट (कोरीलस फेरोक्स) की पोषण प्रोफाइल का निर्धारण
   लेखक : पवित्रा सुब्बा, सुजाता उपाध्याय, एस मनिवन्णन और रेमित लेपचा द्वारा ।

1. स्टडी ऑन वैल्यू एडिशन एंड प्रोडक्ट्स डायवर्सिफिकेशन ऑ मल्लेरो (एलेअग्नस लातिफोलिया)
   लेखक : रेमित लेपचा, सुजाता उपाध्याय, एस मनिवन्णन और पवित्रा सुब्बा ।

1. नाकिमा का पोषण प्रोफाइल का निर्धारण (तुपिसत्रा न्यूटेंस)
   लेखक : रिया गुरुंग, सुजाता उपाध्याय, एस मनिवन्णन और त्रिसना गुरुंग।

कम्प्यूटर एप्लीकेशन विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय ने 28 अगस्त को ग्रीन कंप्यूटिंग पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया ।डॉ अशोक नाथ,एसोसिएट प्रोफेसर, सेंट जेवियर्स कॉलेज, कोलकाता को इस अवसर के लिए प्रख्यात वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था।उन्होंने ष्ग्रीन कंप्यूटिंग के परिचयष शीर्षक पर एक व्याख्यान दिया। डॉ नाथ ने ग्रीन कंप्यूटिंग के कुछ बुनियादी अवधारणाओं पर सभा को जानकारी दी। उन्होंने इसे ऐसे परिभाषित किया ष्इस तरह के मॉनिटर, प्रिंटर, भंडारण उपकरणों, और नेटवर्किंग और संचार प्रणालियों के रूप में कंप्यूटर, सर्वर, और संबंधित उप, के निपटान, अध्ययन और डिजाइन का अभ्यास, विनिर्माणष जिससे पर्यावरण पर कम से कम या बिना कोई प्रभाव के साथ कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सके.इस क्षेत्र में हाल के शोध निष्कर्षों में से कुछ पर प्रकाश डाला, जबकि वह इस तरह के उत्पाद दीर्घायु, एल्गोरिथम दक्षता, संसाधनों के आवंटन, वर्चुअलाइजेशन, टर्मिनल सर्वर, ऊर्जा प्रबंधन, सामग्री रीसाइक्लिंग, संचारण के रूप में ग्रीन कंप्यूटिंग के लिए विभिन्न तरीकों की शुरुआत पर भी प्रकाश डाला।

लीगल एड क्लिनिक, विधि विभाग और सिक्किम राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण ने संयुक्त रूप से 5 सितंबर 2015 को **"Rights of Elderly vis&à&vis Maintenance and Welfare of Parents and Senior Citizens Act] 2007"** विषय पर एक संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया।

संगीत विभाग ने 9 सितंबर को श्री टिम हॉफमैन के साथ को एक दिवसीय संगीतमय इंटरैक्टिव सत्र और व्याख्यान प्रदर्शन का आयोजन किया जिसमे श्री टिम हॉफमैन ने जापान और भारत के संगीत के बारे में अपने अनुभवों को साझा किया। संगीत संध्या में उपस्थित दर्शकों के लिए यह एक पुरस्कृत अनुभव साबित हुई।

नेपाली विभाग द्वारा 23वां भाषा मान्यता दिवस और भानु स्मृति दिवस पालन

नेपाली विभाग द्वारा 23वां भासा मान्यता दिवस और भानु स्मृति दिवस पर्यटन भवन, मेट्रो प्वाइंट, गंगटोक में 22 अगस्त को आयोजित किया गया था।माननीय कुलपति प्रो टीबी सुब्बा, कार्यक्रम की अध्यक्षता की जबकि प्रख्यात भाषा और साहित्यिक विशेषज्ञ, डॉ गोकुल सिन्हा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर अन्य विशिष्ट अतिथियों में, सिक्किम अकादमी के अध्यक्ष श्री पेम्पा तामांग, कुलसचिव, श्री टी के कौल, वित्त अधिकारी, श्री पी के सिंह, और भाषा और साहित्य विद्यापीठ के डीन प्रोफेसर इरशाद गुलाम अहमद उपस्थित थे। डॉ गोकुल सिन्हा, ने ष्नेपाली भाषा और रामायण, विषय पर अपने व्याख्यान में नेपाली को बढ़ावा देने में मिशनरियों की भूमिका पर बल दिया, इसकी पहचान के लिए सिक्किम सरकार द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की है. साथ ही इस जरूरत पर बल दिया कि सिक्किम सरकार कोषगत और भाषाई प्रकाशनों पर रूचि उत्तेजित जागृत करने के लिए काम करे।

माननीय कुलपति, प्रोफेसर सुब्बा ने अपने संबोधन में इस बात को दोहराया कि मान्यता प्राप्त होने के बावजूद नेपाली भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उपलब्धियाँ अभी भी संतोषजनक नहीं हैं। इस अवसर पर चार प्रतिष्ठित आमंत्रित कवियों – श्री राजा पुनयानी, श्री बासुदेव पुलामी, श्री प्रबीन खालिंग और श्रीमती सुधा एम राई ने अपनी कवितायेँ पढीं ।

IQAC कार्यशाला

सिक्किम विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल ने 28 अगस्त को ष्प्फ।ब को जानेष विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला प्रोफेसर टीबी सुब्बा, माननीय कुलपति, जो प्फ।ब की समवर्ती अध्यक्ष है की अध्यक्षता में हुई। कार्यक्रम में कुलसचिव श्री टी के कौल, वित्त अधिकारी, श्री पी के सिंह, सिक्किम विश्वविद्यालय के सभी विभागों और इसके संबद्ध कॉलेजों से संकाय सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति थी। भौतिकी विद्यापीठ, हैदराबाद विश्वविद्यालय से प्रोफेसर एपी

पाठक और एकता विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र, विश्व भारती शिक्षा भवन, शांति निकेतन से डॉ एसएन ओझा इस अवसर के लिए प्रतिष्ठित स्रोत वक्ताओं के रूप में आमंत्रित किए गए थे।डॉ सुबीर मुखोपाध्याय, सिक्किम विश्वविद्यालय प्फ।ब के सदस्य सचिव ने औपचारिक रूप से कार्यशाला के लिए सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।सिक्किम विश्वविद्यालय प्फ।ब के अध्यक्ष के रूप में, प्रोफेसर सुब्बा व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों स्थानों में, जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने के संबंध में, विश्वविद्यालय बिरादरी के सभी सदस्यों को प्फ।ब के महत्व से परिचित

कराया।कुलसचिव श्री टी के कौल, शिक्षकों को समय समय पर उनके शिक्षण विधियों का आकलन करने और बाद में आवश्यक होने पर नवाचारों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।उस अवसर के लिए प्रख्यात वक्ता, प्रोफेसर पाठक ने अकादमिक प्रदर्शन में गुणवत्ता को बनाए रखने के साथ–साथ व्यावसायिक कौशल का पोषण करने में प्फ।ब की भूमिका के बारे में बताया।उन्होंने यह भी सविस्तार बताया कि किन उपायों से विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के संकाय सदस्य संबंधित संस्थानों में गुणवत्ता बढ़ाने में योगदान कर सकते है ।डॉ ओझा, अन्य प्रतिष्ठित स्रोत वक्ता ने अपने व्याख्यान में, उच्च शिक्षा के उन्नयन के बारे में, भारत के लक्ष्य और उद्देश्यों के बारे में दर्शकों को जानकारी दी।उन्होंने प्फ।ब के प्रमुख कार्यों और कैसे यह प्रकोष्ठ गुणवत्ता की शिक्षा सुनिश्चित करने के क्रम में प्रभावी ढंग से कार्य कर सके पर ध्यान केंद्रित किया। इन दोनों में से व्याख्यान के प्रत्येक के बाद एक एक चर्चा सत्र था जो काफी इंटरैक्टिव था और इसने बहस और विचार–विमर्श के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किया।

Faculty Column

राष्ट्रीय सेवा योजना और भारतीय युवाओं के व्यक्तित्व विकास में इसकी भूमिका (Part I)

– डॉ सुजाता उपाध्याय
सहायक प्रोफेसर
उद्यानिकी विभाग

राष्ट्रीय सेवा योजना भारतीय युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए भारत सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं में से एक है जो कि युवा मामले और खेल मंत्रालय के तहत संचालित है।राष्ट्रीय सेवा योजना के समग्र लक्ष्य उच्च शिक्षा प्रणाली को एक विस्तृत आयाम देना और छात्र युवाओं को सामुदायिक सेवा के प्रति उन्मुख करना है जबकि वे एक शैक्षिक संस्थान में अध्ययन कर रहे हैं, ताकि उनके अव्यक्त नेतृत्व कौशलको विकसित किया जा सके ।कॉलेजों ६ 2 स्तर के शिक्षित युवा जिनसे उम्मीद है कि वे भविष्य में प्रशासन की बागडोर संभालेंगे, गांव ६ स्लम समुदाय की समस्याओं से अनजान हैं और कुछ मामलों में उनकी जरूरतों और समस्याओं के प्रति उदासीन हैं।आम ग्रामीणों और झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले लोगों के साथ उनकी बातचीत जीवन की वास्तविकताओं को उनके सामने रखेगी और उनकी सामाजिक धारणा में बदलाव लाएगी और नीति या निर्णय लेने में मददगार होंगी। युवा मामले और खेल मंत्रालय के तहत ग्रामीण युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए एक अन्य योजना नेहरू युवा केन्द्र संगठन है।

एनएसएस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, राष्ट्रीय सेवा के कार्य में छात्रों को शामिल करने का विचार महात्मा गांधी, राष्ट्र पिता के समय का है। डॉ राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने परिसर और समुदाय के बीच रचनात्मक संबंध और र छात्रों और शिक्षकों के बीच स्वस्थ संपर्कों को विकसित करने और स्थापित करने के एक दृश्य के साथ स्वैच्छिक आधार पर शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रीय सेवा की शुरूआत की सिफारिश की।

इसके अलावा कई समितियों और सम्मेलनों के द्वारा योगदान किए गए। योजना आयोग ने चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के लिए 5 करोड़ रुपए के व्यय को मंजूरी दी। ।24 सितंबर 1969, तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ वीकेआरवी राव ने सभी राज्यों में 37 विश्वविद्यालयों में एनएसएस कार्यक्रम का शुभारंभ किया और साथ ही साथ उनके सहयोग और मदद के लिए राज्यों के मुख्यमंत्रियों को अनुरोध किया।एनएसएस को औपचारिक रूप से 24 सितम्बर 1969, राष्ट्रपिता के जन्म शताब्दी वर्ष पर शुरू किया गया। इसलिए, 24 सितंबर को उचित कार्यक्रमों और गतिविधियों के साथ एनएसएस दिवस के रूप में हर साल मनाया जाता है। 1969 में 37 विश्वविद्यालयों में 40,000 छात्रों के नामांकन के साथ शुरू, एनएसएस छात्रों की संख्या ब□कर 3,260,000 स्वयंसेवकों के साथ 299 विश्वविद्यालयों तक हो गई है।

श्यूथ अगेंस्ट अकाल (1973)श, शविश्वविद्यालयों टॉक एड्स ष्(न्ज।) आदि के विषयों के तहत आयोजित विशेष डेरा डाले हुए कार्यक्रमों जैसे कार्यों ने लोगों का विश्वास अर्जित किया है जो कि एनएसएस इकाइयों के उत्कृष्ट कार्य और अनुकरणीय आचरण के उदाहरण हैं ।

1992 में किए गए संशोधन के साथ शिक्षा 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शैक्षिक संस्थानों और बाहरी एजेंसियों के माध्यम से राष्ट्रीय और सामाजिक विकास में खुद को शामिल करने के लिए युवाओं के लिए अवसर प्रदान किए जाने की परिकल्पना की गई है। राष्ट्रीय सेवा योजना के आदर्श वाक्य या नारा ष्मैं नहीं बल्कि आपष (छव्ज डम् ठन्ज ल्व्न्)हैरू श्श।राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक उड़ीसा में स्थित कोणार्क सूर्य मंदिर के श्रथश के पहिये पर आधारित है।एनएसएस प्रतीक एनएसएस बिल्ले पर अंकित है। रजत जयंती वर्ष के दौरान एनएसएस ष्थीम सोंगष ष्उठें समाज के लिएष रचा गया था।एनएसएस गतिविधियों के दो प्रमुख समूहों में विभाजित किया गया है। ये नियमित एनएसएस गतिविधियों और विशेष डेरा डाले हुए कार्यक्रम हैं –

(क) नियमित एनएसएस गतिविधियाँरू गतिविधियों में उन्मुखीकरण, परिसर में काम, संस्थागत कार्य, ग्रामीण परियोजनाओं, शहरी परियोजनाओं, प्राकृतिक आपदा और आपात स्थिति, राष्ट्रीय दिनों का अवलोकन आदि शामिल हैं नियमित गतिविधियों के मुख्य चार घटक हैं रक्तदान, वृक्षारोपण, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और स्वच्छता के प्रति जागरूकता।

(ख) विशेष कैम्पिंग कार्यक्रमरू इसके तहत छुट्टियों के दौरान 7 दिन की अवधि के शिविरों में स्थानीय समुदायों को शामिल करके कुछ विशिष्ट परियोजनाओं के साथ गोद लिए गए गांवों या शहरी मलिन बस्तियों में हैं।50ः एनएसएस स्वयंसेवकों से इन शिविरों में भाग लेने की उम्मीद की जाती है

नियमित गतिविधियों या विशेष शिविर में इन विषयों को लिया जा सकता है रू पर्यावरण संवर्धन और संरक्षण, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और पोषण कार्यक्रम, महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए जागरूकता, समाज सेवा कार्यक्रम, उत्पादन उन्मुख कार्यक्रम, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत एवं पुनर्वास कार्य और शिक्षा व मनोरंजन, और इन गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है रू वृक्षारोपण, एनएसएस पार्कों के निर्माण, साफ–सफाई के प्रति जागरूकता, जन टीकाकरण, एड्स जागरूकता और प्रारंभिक स्वास्थ्य देखभाल, लोगों को शिक्षित करने और महिलाओं के अधिकारों के अस्पतालों में संवैधानिक और कानूनी काम के लिए उन्हें जागरूक बनाने के आयोजन हो सकता है रक्तदान, नेत्र दान प्रतिज्ञा कार्यक्रम, लोगों के साथ काम कर रहे हैं और समझा और बेहतर कृषि पद्धतियों, खरपतवार नियंत्रण, मृदा परीक्षण, मृदा स्वास्थ्य देखभाल और मृदा संरक्षण आदि । (जारी...)

Students' Column

चीनी चाय संस्कृति

सत्यानंद भारती
एमए तृतीय सेमेस्टर
चीनी विभाग

चीन में चाय एक पेय ही नहीं बल्कि अपने आप में एक संस्कृति है।आज, चीन में, चाय घर आज भी पनपते हैं, और उनमें से ज्यादातर पुरानी लोकप्रिय संस्कृति, जो चीनी जीवन की विशेषता है, को बनाए रखने के लिए कठिन प्रयास करते हैं।यह काफी दिलचस्प है कि चीन में चाय संस्कृति का अध्ययन करने के लिए समर्पित पुस्तकों की काफी बड़ी संख्या है रू आठवीं शताब्दी की चाय की क्लासिक से लेकर अधिक समकालीन समय की विशेष खंडों की सैकड़ों पुस्तकें।चीन और ताइवान में चाय के तीन मुख्य किस्में, अर्थात् हरी चाय, काली चाय और वुलोंग चाय ।चीनी संस्कृति में चाय की तैयारी के लिए एक जटिल प्रक्रिया पर जोर दिया जाता है। चाय की पत्तियों को धोने और चाय के बर्तन की सफाई के विभिन्न तरीके हैं। वास्तव में, यह कला और सौंदर्यशास्त्र के करीब देखा जाती है। चाय बनाने की चीनी शैली में, चाय की पत्तियां उबलते पानी में भी लंबे समय के लिए भिगो नहीं सकते अन्यथा चाय कड़वी हो जाती है (हेन कु).आम तौर पर चीन और ताइवान के लोग चाय में चीनी और दूध नहीं डालते। चाय की प्रत्येक किस्म का अपना अलग स्वाद और सुगंध है।चीनी की चाय संस्कृति में अक्सर चाय की खुशबू महक के लिए छोटे से चीनी मिट्टी के बरतन का प्रयोग किया जाता है।इसे वेन जियांग बी कहते है।चाय की विभिन्न किस्मों में कुछ किण्वित (फा जिओ) हैं जबकि बाकी नहीं ।गाओ शेन चा किण्वित नहीं हैं और अगर बड़ी मात्रा में ले लिया जाए तो पाचन के लिए अच्छा नहीं माना जाता।जियांग पियन या सुगंधित चाय उत्तरी चीन में एक लोकप्रिय किस्म है।गाय वान चा या लिडेड प्याली (चा बी) बीजिंग में और दा वान या चाय कटोरा चीन के सिचुआन प्रांत में प्रयोग की जाती है ।चीन में चाय पीना कोई साधारण गतिविधि नहीं है बल्कि अपनी सभी जटिलताओं के साथ, यह वास्तव में एक भव्य समारोह है।

विशेष व्याख्यान

“Taiwan-China-India Trilateral Relations: Prospects and Challenges”

चीनी विभाग ने डॉ मूमिन चेन,**Chair at the Graduate Institute of International Politics and Director of the Center for Strategic Studies on South Asia and the Middle East] National Chung Hsing University] Taichung] Taiwan** द्वारा ''ताइवान–भारत–चीन त्रिपक्षीय संबंधरू संभावनाएँ और चुनौतियां'' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया.प्रस्तुति, बातचीत और चर्चा का केंद्रीय विषय एशिया में दो बढ़ती शक्तियों भारत और चीन के बीच वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों की रूपरेखा बनाना और द्विपक्षीय शैक्षिक के क्षेत्र में ताइवान के भविष्य में संभव हस्तक्षेप भूमिका की खोज पर विशेष ध्यान देने के साथ भारत के साथ शैक्षणिक सहयोग पर ध्यान देना रहा।

हिन्दी राजभाषा कार्यशाला

सिक्किम विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकोष्ठ ने 2 सितम्बर 2015 को 'राजभाषा कार्यान्वयन रू चुनौतियां और उनके समाधानष विषय पर एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया।माननीय कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय, प्रोफेसर टीबी सुब्बा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर कुलसचिव श्री टी के कौल और वित्त अधिकारी श्री पी के सिंह की गणमान्य उपस्थिति थी। श्री दिनेश शाहू, हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर कार्यशाला में मुख्य स्रोत वक्ता थे ।कार्यक्रम के संयोजक हिंदी अधिकारी श्री शैलेश शुक्ला और सह–संयोजक हिन्दी अनुवादक सुश्री जुतिका गोस्वामी थीं।

हिंदी माह समारोह

सिक्किम विश्वविद्यालय हिन्दी सेल 4 सितंबर से 3 अक्टूबर तक हिंदी माह 2015 मना रहा है. यह समारोह 4 सितंबर को हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के साथ शुरू हो चूका है जिसमे सिक्किम विश्वविद्यालय और इसके संबद्ध कॉलेजों से चालीस से अधिक उम्मीदवारों ने भाग लिया।

चीनी भाषा प्रयोगशाला का उद्घाटन

चीनी विभाग ने 3 अगस्त को अपने चीनी भाषा प्रयोगशाला के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया। माननीय कुलपति, प्रोफेसर टीबी सुब्बा, मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर अन्य गणमान्य अतिथियों में कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय, श्री टी के कौल, वित्त अधिकारी, श्री पी के सिंह, भाषा और साहित्य विद्यापीठ के डीन, प्रोफेसर इरशाद गुलाम अहमद और विजिटिंग अतिथि संकाय, डॉ मूमिन चेन शामिल थे। देशी चीनी भाषा के प्रशिक्षण से संबंधित नवीनतम ऑडियो–वीडियो की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए बनाया गया है, इंटरैक्टिव ओरेल डिजिटल भाषा सॉफ्टवेयर चीनी भाषा के शिक्षार्थियों को उच्च अनुवाद और व्याख्या के कौशल के साथ सज्जित करता है, और शिक्षकों को कक्षा शिक्षण और चीनी भाषा के प्रशिक्षण के सबसे नवीन प्रकार प्रदान करता है ।

Glimpse of Nepali Bhasha Diwas 2015

Teachers' Day
Celebration in the Different Departments

A Glimpse of "Knowing IQAC"

Upcoming Events

27 September 2015:

One-day workshop on "Addressing Regional Disparity in Higher Education in India."

Organized By:
Department of Education, Sikkim Unibersity.